

# डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, सिनॉटिक गॉस्पेल, व्याख्यान 13, विवाद अंश

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

ठीक है, हम फिर से यहाँ हैं। हम सिनॉटिक गॉस्पेल को देख रहे हैं। हम बारह में से ग्यारहवीं इकाई शुरू करने वाले हैं।

हमने अब तक ऐतिहासिक यीशु, यहूदी पृष्ठभूमि, कथात्मक शैली में व्याख्या का परिचय, लेखकत्व और तिथि, तथा सिनॉटिक्स की विशेषताओं, यीशु के दृष्टांतों की व्याख्या, साहित्यिक कृतियों के रूप में सुसमाचार, सिनॉटिक समस्या, फिलिस्तीन और यरुशलम का भूगोल, चमत्कारों के वृत्तांतों की व्याख्या, सिनॉटिक्स के बाइबिल धर्मशास्त्र पर विचार किया है, और अब हम विवाद वृत्तांतों, या शायद अधिक व्यापक रूप से, विवाद और संवाद वृत्तांतों की व्याख्या देखना चाहते हैं। विवाद के अंश या तो कथा का रूप ले सकते हैं, जिसमें यीशु विरोधियों को संवाद के रूप में जवाब देते हैं, या प्रवचन का, जैसे कि किसी विवादास्पद विषय से संबंधित यीशु के भाषण की रिपोर्ट। किसी भी मामले में, कुछ ऐसी चीजें हैं जिनके बारे में हमें सोचने की ज़रूरत है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम जो हो रहा है उसे गलत न समझें।

इसलिए, मुझे लगता है कि ये कुछ बातें हैं जिन्हें ध्यान में रखना चाहिए। ध्यान में रखने वाली पहली बात यह है कि हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में क्या सोचते हैं। यीशु शायद उस विशेष विवाद को संबोधित नहीं कर रहे हैं जिसके बारे में आप चिंतित हैं क्योंकि उनकी पहली चिंता उनके अपने समय में चल रहे विवाद से है।

यदि आपने पॉल आदि पर नए दृष्टिकोण के बारे में कुछ सुना है, तो यह मूल रूप से इस तरह की किसी बात पर निर्भर करता है, कि पॉल के लेखन का उपयोग सुधार में काफी हद तक किया गया था क्योंकि सुधारकों ने रोमन कैथोलिक चर्च की विधिवादिता से निपटने की कोशिश की थी, और नए दृष्टिकोण से जुड़े कुछ लोगों ने कहा है, लेकिन यह वह विवाद नहीं है जो पॉल का उस विशेष समय में यहूदीवादियों के साथ था। खैर, हम उस विशेष में नहीं जा रहे हैं, लेकिन इस तरह की चीजें होती हैं, और आपको उस समय क्या हो रहा है, इसके बारे में अच्छी तरह से जानने की कोशिश करनी चाहिए। तो यह बात ध्यान में रखने वाली है।

आपको यह देखने की ज़रूरत है कि जिस समय हम बात कर रहे हैं, उस समय विवाद क्या था। तो, आपको किस तरह की चीजों को देखने की ज़रूरत है? आपको यह पता लगाने की कोशिश करनी होगी कि विरोधी कौन हैं और वे वैचारिक, धार्मिक, व्यावहारिक और इस तरह की किसी चीज़ से कहाँ से आ रहे हैं। फिर, अगली चीज़ जो आपको पता लगाने की कोशिश करनी है, वह है मामले के बारे में यीशु का दृष्टिकोण, और इसमें वास्तव में हमारे विशेष अंश के अलावा अन्य अंशों को देखना शामिल हो सकता है जिनकी आप व्याख्या कर रहे हैं, उपदेश दे रहे हैं, शिक्षा दे रहे हैं, या इस तरह की कोई चीज़।

यहाँ, हमें सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि इस मामले पर यीशु का दृष्टिकोण शायद मेरा दृष्टिकोण न हो। आखिरकार, पवित्रशास्त्र का एक उद्देश्य यह है कि हम जहाँ कहीं भी किसी न किसी तरह से गलत हैं, उसे सुधारें, और इसलिए हमें ऐसा करने की आवश्यकता है। पवित्रशास्त्र का उद्देश्य उन आयतों की तलाश करना नहीं है जिनका उपयोग आप अपने विरोधियों पर थोपने के लिए कर सकते हैं ; इसका उद्देश्य यह पता लगाना है कि पवित्रशास्त्र क्या सिखा रहा है, और यदि आप चाहें तो आपको इसे अपने साथ-साथ अपने विरोधियों पर भी थोपना पड़ सकता है।

विचार करने के लिए पाँचवाँ मामला यह है कि यीशु अपने पक्ष के लिए किस तरह तर्क देते हैं। यहाँ, यह याद रखना उपयोगी है कि यीशु के विरोधी उनके दावों को स्वीकार नहीं करते हैं; शिष्य उनमें से कुछ को स्वीकार करते हैं और शायद यह नहीं जानते कि उनमें से कुछ क्या हैं, इसलिए यीशु के विरोधी उनके शब्दों पर विश्वास करने वाले नहीं हैं। तो, सवाल यह है कि क्या हम उनके शब्दों को वास्तव में जहाँ वे हैं वहाँ से लेकर जहाँ वे हैं वहाँ तक तर्क करते हुए समझ सकते हैं? छठा, मुझे लगता है कि कई बार ऐसा होता है जब हम किसी ऐसे लेखन को समझने की कोशिश करते हैं जो हमारी संस्कृति से अलग है, इस मामले में, यीशु तर्क में कुछ कदम छोड़ सकते हैं जो उनके मूल श्रोताओं या विरोधियों द्वारा आसानी से समझे जा सकते हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हम उन्हें तब तक नहीं समझ पाएँगे जब तक कि हम उन कदमों को पूरा नहीं कर लेते। मुझे याद है कि जब मैं कॉर्नेल में जर्नल लेखों में अपने डॉक्टरेट कार्यक्रम पर काम कर रहा था, और लेखक कहते थे, इस समीकरण से, यह आसानी से दिखाया जा सकता है कि यह सच है, और कुछ चरणों को छोड़ देते हैं, और आपको प्रयास करने और काम करने की आवश्यकता है और यह पता लगाने की कोशिश करनी है कि वे क्या हैं यदि आप समझना चाहते हैं कि लेखक क्या कह रहा है, तो जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहे हों जो पहले से ही उसी पृष्ठभूमि का है, तो आप ऐसा कुछ नहीं कह सकते हैं, लेकिन यह अभी भी सच हो सकता है।

इसलिए, यीशु कुछ कदम छोड़ सकते हैं, लेकिन हमें सावधान रहना चाहिए और यह देखने की कोशिश करनी चाहिए कि क्या हम उन्हें समझ सकते हैं। अंत में, एक बार जब हम समझ जाते हैं कि यीशु अपने मूल विरोधियों और श्रोताओं से क्या कह रहे हैं, तो हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि यह हम पर और आज रहने वाले अन्य लोगों पर कैसे लागू हो सकता है। इसे चित्रित करने का एक तरीका यह है कि जैसे कि प्राचीन समय में परिप्रेक्ष्य एक क्षितिज है, और हम वहाँ के परिप्रेक्ष्य को लेने और इसे अपने क्षितिज में रखने की कोशिश कर रहे हैं और इसे निष्पक्ष तरीके से कर रहे हैं कि हम बाइबिल की सामग्री को संतोषजनक तरीके से संभाल रहे हैं।

खैर, जैसा कि मैंने चमत्कारों और दृष्टान्तों के लिए किया है, मैं संक्षिप्त विवरण में विवाद और संवाद खातों का एक प्रकार का विवरण देना चाहता हूँ। तो, यह उन अंशों की सूची है जो कमोबेश इस शैली में आते हैं। और यहाँ, उनमें से एक यीशु और उसके विरोधियों के बीच के बजाय जॉन बैपटिस्ट और फरीसियों के बीच विवाद होगा, लेकिन बाकी सभी यीशु हैं।

तो, सबसे पहले, पेरिकोपे की घटना, मत्ती 3 और लूका 3 में जॉन द बैपटिस्ट का उपदेश, और वहाँ वह फरीसियों और कुछ अन्य लोगों से निपट रहा है जो मूल रूप से पश्चाताप नहीं कर रहे हैं, और इसलिए वह उन्हें स्थिति की गंभीरता को दिखाने की कोशिश कर रहा है। फिर मत्ती 4 और लूका 4 में यीशु का प्रलोभन है, जंगल में प्रलोभन जहाँ आपको एक संवाद और एक विवाद भी

मिलता है, अगर आप चाहें, तो यीशु और शैतान के बीच और मूल रूप से यह दर्शाता है कि कैसे शैतान यीशु को अलग करने की कोशिश कर रहा था। अध्याय 5:17 से 47 तक कम से कम उस खंड में पर्वत पर उपदेश स्पष्ट रूप से किसी प्रकार का विवादास्पद विवरण है।

यीशु ने अभी कहा, जब तक तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों से बढ़कर न हो, तुम कभी स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर पाओगे। और फिर वह कहता है, तुमने सुना है कि यह कहा गया था, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ। और उनके माध्यम से सोचने से ऐसा प्रतीत होता है कि हम इस बात पर काम कर रहे हैं कि फरीसी विभिन्न पुराने नियम के अंशों को कैसे संभालते हैं या विभिन्न पुराने नियम के अंशों को कैसे आगे बढ़ाते हैं और यीशु को इस बारे में क्या कहना है, ठीक है, यह वही है जिसके बारे में वे वास्तव में हैं, और यही वह है जो आपको उनके साथ करने की आवश्यकता है।

आगे बढ़ते हुए, यदि आप चाहें तो मत्ती 8, मरकुस 1 और लूका 5 में कुष्ठ रोगी के बारे में संवाद विवाद है। मत्ती 8 और लूका 9 में यीशु का अनुसरण करने की कीमत। लकवाग्रस्त व्यक्ति का उपचार, मत्ती 9, मरकुस 2 और लूका 5। याद रखें, यह वही है जहाँ वे उसे छत से नीचे उतारते हैं, और फिर यीशु उससे बहुत ही आश्चर्यजनक ढंग से कहते हैं, बेटा, तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं। तब विवाद मूल रूप से फरीसियों के दिमाग में है, जो पाप को क्षमा कर सकते हैं, लेकिन केवल ईश्वर ही नहीं, आदि। मत्ती का आह्वान, हम शायद अधिक संवाद कहते हैं, लेकिन मत्ती के अध्याय 9 और मरकुस के अध्याय 2 और लूका के अध्याय 5 में।

उन्हीं तीन अध्यायों में उपवास के बारे में एक प्रश्न: मृत लड़की और बीमार महिला मैथ्यू 9, मार्क 5 और ल्यूक 8 में हैं। जॉन द बैपटिस्ट का सवाल है, क्या आप वही हैं जो आने वाले हैं, या हमें मैथ्यू 11 और ल्यूक 7 में किसी और की तलाश करनी चाहिए? मैथ्यू 12, मार्क 2 और ल्यूक 6 में सब्त के प्रभु के रूप में यीशु, जो सब्त के विवादों में से एक है। यीशु गेहूँ के खेतों से गुज़रे, और उनके शिष्यों ने अनाज उठाया और अपने हाथों से रगड़ा और अगर उन्हें पसंद आया तो खाना खाया, जिसे फरीसी कुछ कटाई और फटकना और इस तरह के काम के रूप में देखते थे।

सूखे हाथ वाले व्यक्ति का उपचार मत्ती 12, मरकुस 3 और लूका 6 में है। यीशु और बेलज़ेबुल विवाद, और यह एक ऐसा विषय है जिस पर हम मत्ती 12, मरकुस 3 और लूका 11 में वापस आकर विस्तार से विचार करेंगे। मत्ती 12 और लूका 11 में योना का चिन्ह। मत्ती 12, मरकुस 3 और लूका 8 में यीशु की माँ और भाई हैं। फिर, मत्ती 15 और मरकुस 7 में शुद्ध और अशुद्ध पर विवाद है। मत्ती 15 और मरकुस 7 में यीशु के पास आने वाली कनानी स्त्री। मत्ती 16 और मरकुस 8 में चिन्ह की माँग है। मत्ती 16, मरकुस 8 और लूका 9 में पतरस का स्वीकारोक्ति है। मत्ती 16, मरकुस 8 और लूका 9 में यीशु अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी करते हैं। फिर, मत्ती 17, मरकुस 9 और लूका 9 में दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़का है। फिर मत्ती में मंदिर कर का प्रश्न है 17, इसे ओरिएंटल टू सीज़र मार्ग के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो बाद में है।

यह वे लोग हैं जो मंदिर कर के रूप में आधा शेकेल इकट्ठा करने के लिए इधर-उधर जाते हैं और मूल रूप से पूछते हैं कि क्या यीशु मंदिर कर का भुगतान करते हैं, और पतरस कहता है, ठीक है, हाँ, ज़रूर। और फिर जब वह यीशु के पास वापस आता है, शायद कुछ मिनट या घंटे बाद,

यीशु, अगर आप चाहें, तो उसे हरा देते हैं और कहते हैं, पृथ्वी के राजा किससे कर वसूलते हैं, अपने शाही परिवार से या दूसरों से? और पतरस इसका उत्तर जानता है, कि प्राचीन काल में कर-मुक्त लोग आम तौर पर शाही परिवार और कुलीन वर्ग और उस तरह के लोग होते थे। इसलिए, वह कहता है, वह इसका सही उत्तर देता है।

और फिर यीशु कहते हैं, तो बेटे आज़ाद हैं। और फिर निहितार्थ यह है कि यीशु और उनके शिष्यों को अब मंदिर कर का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन वह कहते हैं, ताकि लोग नाराज़ न हों, तुम बाहर जाओ और पीटर बाहर जाकर इस मछली को पकड़ो और उसके मुँह में यीशु और पीटर के मंदिर कर का भुगतान करने के लिए सही आकार का सिक्का है।

शिष्यों के बीच इस बात पर बहस हुई कि उनमें सबसे बड़ा कौन है, हम वास्तव में बहस का विवरण नहीं सुनते हैं, लेकिन यीशु का जवाब मत्ती 18, मरकुस 9 और लूका 9 में दिया गया है। और फिर मत्ती 19 और मरकुस 10 में तलाक का पूरा मामला सामने आता है जो एक संवाद की ओर ले जाता है। छोटे बच्चों का यीशु के पास आने का सवाल, मत्ती 19, मरकुस 10 और लूका 18। और मत्ती 19, मरकुस 10 और लूका 18 में अमीर युवा शासक का यीशु के पास आना।

माँ का अनुरोध - यह मत्ती 20 और मरकुस 10 में याकूब और यूहन्ना की माँ का अनुरोध है। मत्ती 21, मरकुस 11 और लूका 19 में मंदिर की सफाई। इसके बाद यीशु के अधिकार पर सवाल उठाया गया है, और यह मत्ती 21, मरकुस 11 और लूका 20 में है।

कैसर को कर देना, जिसका उल्लेख कुछ मिनट पहले मत्ती 22, मरकुस 12 और लूका 20 में किया गया था। फिर, सद्दूकी का विवाह और पुनरुत्थान के बारे में प्रश्न मत्ती 22, मरकुस 12 और लूका 20 में भी आता है। फिर, शास्त्री का प्रश्न कि सबसे बड़ी आज्ञाएँ क्या हैं, मत्ती 22 और मरकुस 12 में है।

और फिर यीशु का प्रति-प्रश्न, मसीहा कौन है? और वे कहते हैं, ठीक है, वह दाऊद का पुत्र है। और फिर यीशु पूछते हैं कि दाऊद उसे पितृसत्तात्मक समाज में प्रभु क्यों कहता है। पूर्वज वंशज को प्रभु नहीं कहते, इसलिए कुछ और चल रहा है, यह निहितार्थ है। यह मत्ती 22, मरकुस 12 और लूका 20 में भी है।

फिर बेथानी में अभिषेक है, मत्ती 26, मरकुस 14. पतरस के इनकार की भविष्यवाणी मत्ती 26, मरकुस 14 और लूका 22 में की गई है. गतसमनी में संवाद मत्ती 26, मरकुस 14 और लूका 22 में है.

यीशु की गिरफ्तारी, वही अध्याय। महासभा, महासभा के सामने यीशु, मत्ती 26 और मरकुस 14। जो हमारे विरुद्ध नहीं है, वह हमारे लिए है, मरकुस 9 और लूका 9। अब हमने मत्ती और कुछ अन्य सुसमाचारों को समाप्त कर लिया है, इसलिए अब हम सिर्फ़ उसी पर आते हैं।

यह एकमात्र ऐसा है जो मार्क में है, लेकिन मैथ्यू में नहीं है। और फिर वे जो सिर्फ़ लूका में हैं। 12 साल की उम्र में यीशु, लूका 2. नासरत में यीशु की अस्वीकृति, लूका 4. मछलियों की बड़ी पकड़, लूका 5. यीशु का अभिषेक लूका 7, 36 से 50.

उसे कई बार अलग-अलग तरीकों से अभिषिक्त किया गया है। यह वह है जिसमें वह शमौन फरीसी के घर पर है, और यह उसके पैरों पर मरहम लगाती है और फिर उसके पैरों पर रोती है और फिर अपने बालों से उसके पैरों को पोंछती है। यहाँ यीशु के तर्कों में से एक का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

लूका 10 में अच्छे सामरी का दृष्टान्त। मरियम और मार्था के साथ हुई घटना, जहाँ मार्था चाहती है कि मरियम तैयारी में मदद करे, वह भी लूका 10 में है। लूका 11 में यीशु के छः दुःख।

लूका 12 में धनी मूर्ख का दृष्टान्त। पश्चाताप करो या नष्ट हो जाओ, लूका 13। लूका 13 में अपंग व्यक्ति।

संकरा दरवाज़ा, लूका 13. हेरोदेस लोमड़ी, लूका 13. यीशु फरीसी के घर में, लूका 14.

खोई हुई भेड़, सिक्का और बेटा, लूका 15. फरीसी और पैसा, लूका 16. दस कोढ़ी, लूका 17.

जक्कई, लूका 19. यरूशलेम की बेटियाँ, लूका 23. दो चोर, लूका 23.

इम्माऊस का मार्ग, लूका 24. शिष्यों को दर्शन, लूका 24. यदि आप इन बातों पर मनन करें, जैसा कि हमने बताया, तो आप देखेंगे कि इनमें से कुछ चमत्कार हैं, कुछ दृष्टान्त हैं, तथा कुछ कुछ और हैं।

इसलिए, कुछ चमत्कारों में संवाद या विवाद शामिल होता है, चाहे एक बार हो या नहीं। सब्त के दिन यीशु के चमत्कारों ने हमेशा विवाद उत्पन्न किया, और यीशु के दृष्टान्त अक्सर किसी न किसी तरह के विवाद की प्रतिक्रियाएँ थीं।

खैर, हम इनमें से एक पर विस्तार से विचार करना चाहते हैं, और वह है लूका 11 में बैलज़ेबुल द्वारा दुष्टात्माओं को निकालना। और हम 14 से शुरू करके 28 तक जाएंगे। लूका हमें बताता है, और वह, अर्थात्, यीशु, एक दुष्टात्मा को निकाल रहा था, और वह गूंगी थी।

और ऐसा तब हुआ जब दानव बाहर आया और गूंगा आदमी बोला, और भीड़ ने आश्चर्यचकित होकर देखा। तो, हमें वहाँ एक चमत्कार की कहानी मिली, यहाँ तक कि भीड़ की प्रतिक्रिया, आदि के साथ भी। लेकिन यह सिर्फ इसका परिचय है।

पद 15 परन्तु उनमें से कितनों ने कहा, “यह दुष्टात्माओं के सरदार बैलज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।” औरों ने उसे परखने के लिये उससे कोई आकाश का चिन्ह ढूँढ़ना चाहा या ढूँढ़ रहे थे। परन्तु उस ने उनके मन की बातें जानकर उनसे कहा, “ जिस राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और जिस घर में फूट होती है, वह नाश हो जाता है।”

अब, यदि शैतान वास्तव में अपने ही विरुद्ध विभाजित है, तो उसका राज्य कैसे टिकेगा? क्योंकि तुम कहते हो, मैं बैलज़ेबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ। अब, यदि मैं बैलज़ेबुल

की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारे पुत्र उन्हें किसके द्वारा निकाल रहे हैं? इसलिए, वे तुम्हारे न्यायी होंगे। लेकिन यदि मैं परमेश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे ऊपर आ गया है।

जब कोई बलवान व्यक्ति पूरी तरह से हथियारबंद होकर अपने घर की रखवाली करता है, तो उसकी संपत्ति सुरक्षित रहती है। लेकिन जब कोई उससे भी अधिक बलवान व्यक्ति आकर उसे हरा देता है, तो वह उसके हथियार छीन लेता है, जिस पर उसे भरोसा था, और वह अपनी लूट या हथियार बाँट लेता है। जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरुद्ध है, और जो मेरे साथ नहीं है, वह बिखराव कर रहा है।

जब कोई अशुद्ध आत्मा किसी मनुष्य में से निकल जाती है, तो वह विश्राम की खोज में सूखी जगहों में फिरती है, और जब उसे कोई विश्राम नहीं मिलता, तो कहती है, मैं अपने उसी घर में लौट जाऊँगी, जहाँ से मैं निकली थी। और जब वह लौटती है, तो उसे झाड़ा-बुहारा और व्यवस्थित पाती है। फिर वह जाकर अपने से भी बुरी सात आत्माओं को ले आती है, और वे आकर वहाँ वास करती हैं।

और उस मनुष्य की पिछली परिस्थितियाँ पहली से भी बदतर हैं। जब वह ये बातें कह ही रहा था, तो भीड़ में से एक स्त्री ने ऊँची आवाज़ में उससे कहा, “धन्य है वह गर्भ जिसमें तू रहा और वह स्तन जिससे तूने दूध पिया।” उसने कहा, “इसके विपरीत, धन्य हैं वे जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।”

आइए उन आयतों को देखें और कुछ ऐसी बातों पर गौर करें जो यूनानियों से जुड़ी हैं। फिर, हम वापस आएं और पूरे अंश के बारे में सोचेंगे। आयत 15 में, उनमें से कुछ ने कहा कि शैतानों के शासक, बेलज़ेबुल ने शैतानों को बाहर निकाला। हम मैथ्यू में समानांतर अंश को देखते हैं, और उन्हें फरीसी के रूप में वर्णित किया गया है।

अगर हम मार्क में समानांतर मार्ग को देखें, तो उन्हें यरूशलेम के शास्त्री के रूप में वर्णित किया गया है। यह हमें कुछ महत्वपूर्ण बात याद दिलाता है। यदि आप किसी मार्ग पर काम कर रहे हैं, तो आपको जांच करनी चाहिए और देखना चाहिए कि क्या इसमें समानताएँ हैं, जो कि सुसमाचारों में असामान्य नहीं है।

फिर, उन्हें पढ़ें और सुनिश्चित करें कि आप अपनी व्याख्या में ऐसा कुछ न करें जो समानांतर अनुच्छेदों में से किसी एक का खंडन करता हो। यह एक तरह की पहली श्रेणी की बात है। वैसे, उदारवादियों द्वारा हमेशा इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है क्योंकि उनके पास इसके इतिहास और उस तरह की चीज़ों के बारे में अपने सिद्धांत होते हैं।

पद 16 में, उसकी परीक्षा लेने वाले अन्य लोग स्वर्ग से संकेत पाने की कोशिश करने लगते हैं। यह वास्तव में हमें हमारे संदर्भ से परे पद 29 से जोड़ता है, जहाँ यह फिर से आता है, लेकिन हम यहाँ उससे निपट नहीं रहे हैं। फिर, वह आगे बढ़ता है और पद 19 में उन्हें जवाब देना शुरू करता है।

अब, अगर मैं बेलज़ेबुल द्वारा दुष्टात्माओं को निकाल रहा हूँ, तो आप उन्हें किसके द्वारा निकाल रहे हैं? यह एक अगर निर्माण का एक अच्छा उदाहरण है, जिसे आपके कुछ पुराने व्याकरण में सत्य-से-तथ्य अगर कहा जाता था। लेकिन हाल के वर्षों में, व्याकरणविदों ने देखा है कि वे वास्तव में वही हैं जिन्हें हम तार्किक कह सकते हैं यदि वह है। यदि यह सच है, तो इससे यही निष्कर्ष निकलता है।

लेकिन मैं यह नहीं मान रहा हूँ कि यह सच है, ठीक है? और यीशु स्पष्ट रूप से यह नहीं मान रहे हैं कि वे बेलज़ेबुल द्वारा दुष्टात्माओं को निकाल रहे हैं। जब भी कोई मजबूत आदमी पूरी तरह से सशस्त्र होता है, तो मैंने पद 21 की शुरुआत का अनुवाद इस तरह किया है, लेकिन यह वास्तव में एक मजबूत आदमी के सामने एक निश्चित लेख है। और कुछ लोग भटक गए हैं और इस तरह से सोचा है कि, ठीक है, यीशु संकेत दे रहे हैं कि यह वही है, आदि।

लेकिन यह सिर्फ एक निश्चित उपपद का सामान्य उपयोग है। और हाँ, वास्तव में, जब आप देखते हैं कि दृष्टांत कैसे स्थापित किया गया है, तो यीशु खुद को मजबूत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वहाँ यूनानी में कोई संकेत नहीं है। यहाँ यूनानी में और क्या ध्यान देने योग्य है? एक प्लूपरफेक्ट है जो श्लोक 22 में दिखाई देता है, जिस पर उसने भरोसा किया था, जो हमारे नए नियम के यूनानी में बहुत दुर्लभ है।

फिर हमें पद 24 में अशुद्ध आत्मा के साथ निश्चित उपपद का सामान्य उपयोग मिलता है, जिसका मैंने अशुद्ध आत्मा के रूप में अनुवाद किया है। और यह हमारे मार्ग में चल रही उल्लेखनीय यूनानी बातों का बहुत अच्छी तरह से ख्याल रखता है। अगली चीज़ जिस पर मैंने यहाँ गौर किया वह इस विशेष घटना में कथा के तत्व हैं।

यह एक ऐसी कथा है जिसमें संवाद निहित है। वास्तव में, आपके पास फरीसी या कोई और है जो कह रहा है कि वह बेलज़ेबुल द्वारा राक्षसों को निकाल रहा है। और वास्तव में, यीशु की प्रतिक्रिया ही इस बात का सबसे बड़ा कारण है।

और फिर अंत में आपके पास यह स्त्री है। धन्य है वह गर्भ जिसने आपको जन्म दिया। और फिर यीशु उसका उत्तर देते हैं।

और एक व्यक्ति पहले से ही साइन अप की मांग कर रहा है, और वह हमारे मार्ग के ठीक बाद उसे उठा लेगा। इसलिए, हम यहाँ एक तरह के जटिल संवाद को देख रहे हैं, जब वास्तव में, आप एक भीड़ को संबोधित कर रहे हैं, और आपके पास भीड़ से विभिन्न लोग कुछ कहते हैं। लेकिन यह एक कथा भी है।

तो, यहाँ कथा के तत्व अभिनेता या पात्र हैं। खैर, यहाँ यीशु है। यहाँ अनाम विरोधी हैं, जिनका वर्णन मत्ती और मरकुस में हमारे लिए शास्त्री और फरीसी के रूप में किया गया है।

कुछ और भी हैं, और वे हमारे लिए पहचाने नहीं गए हैं। और एक महिला है। घटनाएँ और कार्य।

यीशु एक मूक व्यक्ति को ठीक करता है जो दुष्टात्मा से ग्रस्त है। विरोधियों का दावा है कि वह बेलज़ेबुल के ज़रिए काम कर रहा है। हमें वापस आकर सोचना होगा कि बेलज़ेबुल कौन है।

अन्य लोग स्वर्गीय संकेत की तलाश कर रहे हैं। यीशु उन लोगों को जवाब देते हैं जो दावा करते हैं कि वे शैतानी शक्ति से काम कर रहे हैं। महिला उनकी माँ को आशीर्वाद देकर बीच में बोलती है।

और यीशु ने उसे उत्तर दिया। और फिर, जहाँ हमने अपना मार्ग रोका था, वहाँ से यीशु ने उन लोगों को उत्तर दिया जो संकेत की तलाश में थे। दृश्यों का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन संभवतः यह सब एक ही दृश्य है।

इस अर्थ में, वह कुछ परिस्थितियों में उनसे बात कर रहा है। कथानक। खैर, यीशु के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाएँ हैं जिनसे वह निपटता है।

आप कह सकते हैं कि यही मुख्य कथानक है। और इसलिए, यीशु के विरोध और यीशु को बदनाम करने के प्रयासों का जवाब दिया गया है। शायद हम महिला की टिप्पणी से कह सकते हैं कि ध्यान भटकाने वाली बात को फिर से केन्द्रित किया गया है।

हमारे पास दो या तीन उदाहरण हैं जहाँ कोई व्यक्ति यीशु से कुछ कहता है, और यह किसी तरह से ध्यान भटकाने वाला होता है। यह उन्हें जो हो रहा है उससे दूर ले जाता है, दर्शकों को जो हो रहा है उससे दूर ले जाने की कोशिश करता है। मुझे वह व्यक्ति याद है जो चाहता था कि यीशु विरासत को विभाजित करने के अपने भाई के साथ विवाद में मध्यस्थता करें, और यीशु ने इसका जवाब दिया।

लेकिन कुछ मायनों में, यह एक विकर्षण है। तो, इसकी पृष्ठभूमि में विवाद है। बेलज़ेबुल कौन है? वैसे, ये वे सवाल थे जो मैंने एक अध्ययन पत्र पर लिखे थे।

मेरे विद्यार्थियों को खुद ही सोचना चाहिए और फिर कक्षा में चर्चा करनी चाहिए। बेलज़ेबुल कौन है? यीशु के विरोधी क्या कह रहे हैं जब वे उस पर बेलज़ेबुल द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने का आरोप लगाते हैं? खैर, हमारी कहानी खुद बेलज़ेबुल को दुष्टात्माओं के शासक के रूप में पहचानती है। यह स्वचालित रूप से उसे शैतान नहीं बनाता है, ठीक है? क्योंकि शैतान के पास कुछ हो सकता है, जैसा कि सीएस लुईस कहते हैं, उसके अधीन राजतंत्र, ठीक है? तो, यह आदमी कोई और हो सकता है।

यह नाम बाल से आया है, जो भगवान के लिए मानक शब्द है, जो एक देवता या... हाँ, यह संभवतः एक ऐसा देवता है जिसकी पहचान अलग-अलग स्थानों पर की जाती है, न कि अलग-अलग देवताओं के रूप में देखा जाता है। और इसलिए, विशेष रूप से यहाँ बाल देवता, ज़ेबुल के साथ संयुक्त, के विभिन्न संभावित अर्थ हैं और यहाँ तक कि सदियों से एल के बजाय बी के साथ भी समाप्त किया गया है। बेलज़ेबूब और साथ ही बेलज़ेबुल। विभिन्न अर्थ गंदगी, गंदगी का स्वामी, स्पष्ट रूप से पूरक नहीं, भगवान राजकुमार, निवास का स्वामी, आदि हैं।

क्या बेलज़ेबुल को शैतान का पर्यायवाची समझा जाना चाहिए या उसके अधीनस्थों में से एक का नाम जो राक्षसों पर शासन करता है, यह वास्तव में स्पष्ट नहीं है। यह एक पेचीदा सवाल है। हमारे पास निश्चित रूप से पुराने नियम और नए नियम में पॉल की टिप्पणियों से वारंट हैं कि विभिन्न प्रकार के झूठे धर्मों के पीछे शैतानी और राक्षसी शक्तियाँ छिपी हुई हैं।

और इसलिए हम देख सकते हैं। यह स्पष्ट है कि विरोधी यीशु पर शैतानी शक्ति का उपयोग करने का आरोप लगा रहे हैं, शायद इसलिए क्योंकि वे ऐसा मानते हैं, लेकिन भीड़ के सामने उसे बदनाम करने के लिए भी। यदि आप पीछे हटकर इसे उन फरीसियों के दृष्टिकोण से देखें जो विपक्ष में चले गए हैं या शास्त्री जो उसी तरह की श्रेणी में आते हैं, तो उन्हें यह समस्या है कि यीशु ऐसे चमत्कार कर रहे हैं जो कई शताब्दियों से कोई नहीं कर रहा है।

वास्तव में, यदि आप इसके बारे में सोचें तो एक बड़ी समस्या यह है कि जब आप यीशु के चमत्कारों का विश्लेषण करते हैं, तो वे मूसा और एलिजा और एलीशा और ऐसे ही लोगों के समान ही हैं। तो, आप इसके बारे में क्या करने जा रहे हैं? खैर, यीशु के उत्तर के संबंध में इस तरह की पृष्ठभूमि काफी महत्वपूर्ण होने जा रही है। इसलिए, उन्हें वास्तव में जो करना है वह यह है कि यदि वे यह स्वीकार नहीं करने जा रहे हैं कि यीशु वही हैं जो वे होने का दावा करते हैं, तो उन्हें यह बताना होगा कि उनके पास शैतानी शक्तियाँ हैं।

आपके पास भी कुछ ऐसी ही स्थिति है, मान लीजिए, एक पीढ़ी पहले जब गैर-करिश्माई लोग करिश्माई लोगों को जवाब दे रहे थे और इस तरह के लोग, शायद अब कुछ हद तक खत्म हो गए हैं, हालांकि गैर-करिश्माई लोग अभी भी चमत्कार होने पर संदेह करते हैं और, निश्चित रूप से, मुझे लगता है कि वे सही हैं, उन्हें शास्त्रों के खिलाफ जांचने की कोशिश कर रहे हैं और देखें कि यह उचित है या नहीं। तो, वह विवाद क्या है जिसे यीशु संबोधित कर रहे हैं? खैर, यह वास्तव में बहुत सीधा है। सवाल यह है कि, यीशु की शक्ति का वास्तविक स्रोत क्या है? यहाँ उनके विरोधी कौन हैं? वे कहाँ से आ रहे हैं? खैर, जैसा कि देखा गया है, पहले ही दो बार बताया गया है, विरोधियों को ल्यूक में निर्दिष्ट नहीं किया गया है, लेकिन मैथ्यू 12:24 उन्हें फरीसी के रूप में पहचानता है, और मार्क 3:22 कानून का एक शिक्षक है जो यरूशलेम से आया था।

वे इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि यीशु चमत्कारी कार्य कर रहे हैं, लेकिन चूँकि वे यीशु को ईश्वर से स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं, तो वे शैतान से ही होंगे। तो, फिर, हमारे अंश में यहाँ सवाल यह है कि यीशु अपनी स्थिति के लिए किस तरह से तर्क दे रहे हैं? क्या आप कोई ऐसी जगह देख सकते हैं जहाँ यीशु अपने तर्क में कुछ कदम छोड़ रहे हों क्योंकि उनके विरोधियों या श्रोताओं को उनकी ज़रूरत नहीं है? खैर, मैंने श्लोक 17 से 26 तक पढ़ा, और यही मूल रूप से मैंने अपने छात्रों से करने का आग्रह किया, और मैंने यह देखने की कोशिश की कि क्या वे इसे अलग-अलग तर्कों में विभाजित कर सकते हैं। तो, श्लोकों को खोदकर उन्हें फिर से देखने में कोई बुराई नहीं है।

ऐसा लगता है कि 17 और 18 एक विभाजित राज्य से किसी तरह के तर्क हैं। उसने उनके विचारों को जानते हुए कहा कि हर राज्य जो अपने आप में विभाजित है, देर से बर्बाद होता है, और एक घर जो दूसरे घर के खिलाफ विभाजित होता है, वह गिर जाता है। अब, अगर शैतान वास्तव में

अपने आप में विभाजित है, तो उसका राज्य कैसे खड़ा रहेगा? और फिर व्याख्यात्मक, क्योंकि आप बेलज़ेबुल द्वारा कह रहे हैं, मैं राक्षसों को निकाल रहा हूँ।

वह शायद अंत में ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि शायद भीड़ में से कुछ लोग विरोधियों की बातें नहीं सुन पाते। फिर, 19 थोड़ा अलग तर्क लगता है। मेरा मतलब है, ये स्पष्ट रूप से किसी तरह से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, और मैंने इसे आपके भूत भगाने वाले का नाम दिया है।

अब, अगर मैं बेलज़ेबुल द्वारा दुष्टात्माओं को निकाल रहा हूँ, तो आपके बेटे उन्हें किसके द्वारा निकाल रहे हैं? और बेटे हो सकते हैं, आप जानते हैं, आपके शिष्य, आदि। और यह कहना शायद उचित होगा कि फरीसियों के पास एक या दूसरे प्रकार के भूत भगाने वाले थे। जोसेफस भूत भगाने के बारे में उल्लेख करता है।

उनका उदाहरण वास्तव में इसे एसेनियों से जोड़ता है, लेकिन यह अनुचित नहीं होगा कि फरीसियों के पास भी कुछ ऐसा ही था। और फिर, श्लोक 20 में, मेरे पास तर्क के लिए लेबल के रूप में राज्य आया है। यीशु, लेकिन अगर मैं परमेश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकाल रहा हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे ऊपर आ गया है।

तो, बहस करते हुए, आप जानते हैं, अगर यह, अगर मैं चमत्कारिक ढंग से दुष्टात्माओं को निकाल रहा हूँ, तो यह राज्य में आने के बारे में कुछ कहता है। यह हमें बाइबल धर्मशास्त्र, वहाँ के सिनॉप्टिक्स की चर्चा में वापस ले जाता है, बस पिछली बार, जहाँ यह सबूतों में से एक होगा कि राज्य आ गया है, अगर आप चाहें तो। फिर श्लोक 21 से 22 तक, मैं मजबूत और अधिक मजबूत लेबल करता हूँ।

जब भी कोई ताकतवर व्यक्ति पूरी तरह से हथियारबंद होकर अपने घर की रखवाली करता है, तो उसकी संपत्ति सुरक्षित रहती है। लेकिन जैसे ही कोई उससे ज़्यादा ताकतवर व्यक्ति आता है और उसे हरा देता है, तो वह उसके कवच को छीन लेता है जिस पर उसे भरोसा था, और उसकी लूट, संपत्ति या उसके हथियार, जिनका इस्तेमाल वह खुद की रक्षा के लिए करता रहा है, बाँट देता है। श्लोक 23, मैं एक और तर्क मानता हूँ, कोई तटस्थता नहीं।

जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरुद्ध है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखराता है। फिर, हमें श्लोक 24 से 26 में कुछ हद तक उलझन भरा भाग मिलता है, जिसे मैं आत्मा का घर कहता हूँ। जब एक अशुद्ध आत्मा किसी व्यक्ति से बाहर निकलती है, तो वह आराम की तलाश में निर्जल स्थानों से होकर गुजरती है।

जब वह किसी को नहीं पाता है, तो वह कहता है, "मैं अपने घर लौट जाऊँगा, जहाँ से मैं चला आया था। और वह आता है और पाता है कि घर साफ-सुथरा और व्यवस्थित है। फिर वह जाता है और अपने से भी बुरी सात आत्माओं को ले आता है, और वे अंदर आकर वहाँ रहने लगती हैं।"

अंतिम परिस्थितियों में, यह आदमी पहले वाले से भी बदतर है। ये सभी यीशु के चमत्कारों को शैतानी बताने की विरोधी की रणनीति का जवाब देते हैं। वे कुछ इस तरह से तर्क करते दिखते हैं।

और इसलिए, अगर आप चाहें तो हम चरणों में भर रहे हैं। श्लोक 17, 18, विभाजित राज्य। शैतान के परमेश्वर के साथ युद्ध को देखते हुए, ठीक है, यह इस मामले के बारे में फरीसी दृष्टिकोण के साथ-साथ यीशु का दृष्टिकोण भी होगा।

क्या शैतान परमेश्वर के सामने अपनी सेना को विभाजित करने का जोखिम उठा सकता है? जब आप प्राचीन इतिहास और आधुनिक इतिहास में युद्धों को देखते हैं, तो अक्सर एक चतुर रणनीतिकार अपनी सेना को विभाजित कर देता है और उनमें से एक को कहीं और ले आता है। और यह अक्सर काम करता है, लेकिन यह इसलिए काम करता है क्योंकि विरोधी सेनापति को पता नहीं होता कि क्या हो रहा है। अब कोशिश करें और इसे आध्यात्मिक क्षेत्र में लाएँ।

शैतान अपनी सेनाओं को विभाजित करने जा रहा है क्योंकि परमेश्वर को नहीं पता कि क्या हो रहा है और वह काम नहीं करने जा रहा है। तो, क्या शैतान ऐसा करने का जोखिम उठा सकता है? आखिरकार, परमेश्वर कोई मानव सेनापति नहीं है जिससे सेना की गतिविधियों को छिपाया जा सके या जिसे मात दी जा सके। क्या शैतान इस बात का जोखिम नहीं उठा रहा है कि परमेश्वर उसे नष्ट करने के लिए हस्तक्षेप करेगा? शैतान भविष्य को इतनी अच्छी तरह से नहीं जानता कि वह यह जान सके कि अगर वह सही काम नहीं करता है, तो वह किसी खास चीज में पराजित नहीं हो सकता है, आप जानते हैं, सुरक्षित काम, वह काम जो उसके फायदे के लिए काम करेगा।

श्लोक 19, आपके भूत भगाने वाले, कुछ इस तरह कहते हैं। आप किस आधार पर मेरे भूत भगाने और आपके फरीसी भूत भगाने वालों के बीच अंतर कर सकते हैं? क्या आपके भूत भगाने वाले ज़्यादा शक्तिशाली हैं? क्या वे ज़्यादा कुशल हैं, वगैरह? और अगर वे नहीं हैं, तो आप जानते हैं, आप लोग भगवान से काम कर रहे हैं, और आप उतने शक्तिशाली या कुशल नहीं हैं, वगैरह, यह तर्क बहुत अच्छा नहीं चलने वाला है। फिर श्लोक 20 में, इसे फिर से यहाँ आपके लिए पढ़ें।

अगर मैं ईश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकाल रहा हूँ, तो ईश्वर का राज्य तुम्हारे ऊपर आ गया है। ऐसा लगता है कि यीशु द्वारा ईश्वर की उंगली वाक्यांश का उपयोग निर्गमन 8-19 को याद दिलाने के लिए किया गया है, जहाँ मिस्र के जादूगर, मूसा के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए, अंततः जब वह, आप जानते हैं कि जब ईश्वर मूसा को अनुमति देता है या मूसा को मच्छरों को अंदर लाने के लिए निर्देशित करता है, तो मिस्र के जादूगर इसका मुकाबला नहीं कर सकते। और इसलिए, वे कहते हैं, यह शक्ति ईश्वर से आती है।

यह ईश्वर की शक्ति है। लेकिन अगर यीशु के चमत्कार ईश्वर की ओर से आते हैं, तो आपको इस तथ्य का सामना करना होगा कि उसके द्वारा, ईश्वर का राज्य आ गया है, और आपको इसे शैतानी के रूप में खारिज करने की कोशिश करने के बजाय उस आधार पर प्रतिक्रिया देनी होगी। श्लोक 21 और 22, मजबूत और मजबूत, मुझे लगता है कि तर्क कुछ इस तरह दिखता है।

वास्तव में, दुष्टात्माओं को बाहर निकालने की यीशु की शक्ति, एक सशस्त्र योद्धा की दूसरे द्वारा पराजय और उसकी संपत्ति की लूट की तरह, दिखाती है कि यीशु ने शैतान को हराया और लूटा

है। यदि आप चाहें तो उसने शैतान के बंदियों को छीन लिया और उन्हें मुक्त कर दिया। 23, मैंने पहले ही यहाँ इसका उल्लेख किया है, कोई तटस्थता नहीं।

23, इस युद्ध में कोई तटस्थता नहीं है। या तो आप भगवान की तरफ हैं या फिर शैतान की तरफ। अगर आप मेरे पक्ष में नहीं हैं, तो आप मेरे खिलाफ हैं।

यदि आप मेरे साथ सहयोग नहीं कर रहे हैं, तो आप मेरे खिलाफ काम कर रहे हैं। अब, श्लोक 24, 26 कई मायनों में उलझन भरा है। यह वही है, मुझे यहाँ वापस आना चाहिए, मैं अपने श्लोक खो देता हूँ।

मुझे लगता है कि मैंने कुछ गड़बड़ कर दी है। चलो देखते हैं कि मैं इसे फिर से व्यवस्थित कर सकता हूँ या नहीं। मुझे लगता है कि अब हम आगे बढ़ रहे हैं।

श्लोक 24 से 26, एक तरह की कथा है, ठीक है, जब एक अशुद्ध आत्मा एक आदमी से बाहर निकलती है, एक निर्जल स्थान से गुजरती है, विश्राम की तलाश करती है, कोई जगह नहीं पाती है, तो वह कहती है, मैं अपने घर वापस आ जाऊँगी, वापस आकर उसे साफ-सुथरा और व्यवस्थित पाती है, वह अपने साथ सात अन्य आत्माओं को लाती है जो खुद से भी बदतर होती हैं, और वे वहाँ आकर रहने लगती हैं, आदि। यह एक दृष्टांत प्रतीत होता है, जो उस व्यक्ति के साथ क्या होता है, जिसे दुष्टात्मा के कब्जे से मुक्त किया गया है, को चित्रित करता है। और जैसा कि शास्त्र में कुछ अन्य स्थानों पर होता है, व्यक्ति को किसी अर्थ में एक घर के रूप में चित्रित किया गया है, और दुष्टात्माएँ घर में रहने वाले लोग हैं।

हमारे पास कुछ इस तरह की तस्वीर है, जहाँ पॉल हमारे वर्तमान शरीर को एक तम्बू के रूप में चित्रित करता है, और पुनरुत्थान शरीर को एक घर के रूप में, और हम संभवतः उसमें रहने वाली आत्मा के रूप में, यदि आप चाहें तो। तो, हमारे पास यहाँ कुछ ऐसा ही है। और इसलिए मूल रूप से, यह दृष्टांत यह चित्रित करता है कि एक ऐसे व्यक्ति के साथ क्या होता है जिसे राक्षसी कब्जे से मुक्त किया गया है यदि उसके भीतर राक्षसी वापसी का विरोध करने के लिए कोई शक्ति नहीं है।

और ऐसा लगता है कि यही हो रहा है। मेरा अनुमान है कि यह एक दृष्टांत है। यीशु हमेशा हमें दृष्टांतों में बात करते समय कुछ नहीं बताते।

और फिर तुलना यह प्रतीत होती है कि यदि इस्राएल या वे लोग जिनसे वह बात कर रहा है, व्यक्तिगत रूप से यीशु को इस चमत्कारी शक्ति के प्रदर्शन के बाद अस्वीकार कर देते हैं, तो जब शैतानी ताकतें वापस आएंगी तो वे अभिभूत हो जाएंगे। यह मेरी समझ होगी। और यह थोड़ा मुश्किल है कि इसका क्या अर्थ निकाला जाए, लेकिन मुझे लगता है कि मैं इस विशेष प्रतिक्रिया के साथ इसी दिशा में जाने का सुझाव दूंगा।

तो, यह इन टिप्पणियों के अंत में एक तरह की चेतावनी है। क्या महिला की टिप्पणी और श्लोक 27-28 में यीशु की प्रतिक्रिया इसमें फिट बैठती है, या यह एक नया पेरिकोप, एक नई घटना है? खैर, मुझे यकीन नहीं है कि यह एक नई घटना है या नहीं। अगर यह है तो यह बहुत छोटा है।

पद 16 के अलावा, संकेत की तलाश करने वाले अन्य लोग पद 29 से जुड़ते हुए प्रतीत होते हैं, जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं। यह एक दुष्ट पीढ़ी है जो संकेत की तलाश करती है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह शायद नहीं है।

हो सकता है, बेशक, हर चीज़ को पेरिकोप्स में विभाजित करने का हमारा विचार कुछ जगहों पर थोड़ा कृत्रिम हो, इसलिए वहाँ एक समस्या हो सकती है। यदि यह इस पेरिकोप्स में अंतिम या अंतिम से अगला आइटम है, तो इसका बाकी से संबंध यह हो सकता है कि यह एक शारीरिक जन्म नहीं है, लेकिन आज्ञाकारिता ही मायने रखती है और ईश्वर के साथ उचित संबंध मसीहा को जन्म देने से भी बड़ा आशीर्वाद है। यह कैसे आएगा? खैर, एक महिला ने इसे उठाया, और इसलिए यीशु के दृष्टिकोण से उनके अपमान के समय, उनके गर्भाधान से लेकर उनके पुनरुत्थान या स्वर्गारोहण तक, यदि आप चाहें, तो वे हर समय अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग नहीं करते हैं।

इसलिए, वह कई बार चीजों से हैरान होता है। इसलिए, यह एक आश्चर्य हो सकता है जिसे महिला ने पेश किया है, और फिर भी यीशु ने इसका अच्छी तरह से जवाब दिया, अगर आप चाहें तो। और फिर, यह एक चेतावनी बनी रहेगी कि यहाँ ऐसे लोग हैं जो सोचते हैं कि वे सुरक्षित हैं क्योंकि वे इज़राइल हैं, जैसा कि मुक्ति के इतिहास में कुछ अन्य बार हुआ है, लेकिन मसीहा को अस्वीकार करना वास्तव में चीजों को गड़बड़ करने वाला है।

और इसलिए, यह ईश्वर द्वारा मसीहा के इतने करीब न होने के लिए एक सही प्रतिक्रिया है कि वह उसकी माँ भी नहीं है। यह रोमन कैथोलिक मैरीओलॉजी के लिए एक बढ़िया मार्ग नहीं है, वास्तव में, लेकिन यह मुख्य रूप से इसके बारे में नहीं है। लेकिन इसलिए मेरा मानना है कि शारीरिक जन्म के बजाय आज्ञाकारिता ही मायने रखती है, आप यीशु के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, बजाय इसके कि आप शारीरिक रूप से उससे कैसे संबंधित हैं, और ईश्वर के साथ उचित संबंध मसीहा को जन्म देने से भी बड़ा आशीर्वाद है।

और आखिरी सवाल जो मैंने अपनी स्टडी शीट पर पूछा था, वह था, आज आपके सामने आने वाले विभिन्न विवादों के प्रति यीशु के इस जवाब में आप क्या अनुप्रयोग देखते हैं? और ठीक है, चलिए देखते हैं। हम श्लोक 17 से 22 में दिए गए तर्कों का सारांश दे सकते हैं और उन्हें आपके लिए निकालने के लिए यहाँ वापस आ सकते हैं। वे होंगे... हम यहाँ हैं।

मैं अभी भी इस सामान को इधर-उधर घुमा रहा हूँ। ठीक है, हम यहाँ हैं। विभाजित राज्य, आपका भूत भगाने वाला, राज्य आ गया, मजबूत और मजबूत।

ठीक है, आप इनसे कैसे निपटेंगे? उह, हम आयत 17 से 22 में दिए गए तर्कों को संक्षेप में इस तरह से प्रस्तुत कर सकते हैं कि हम अपने उस विशेष समूह के लिए पक्षपात करने या विशेष दलील देने के बजाय विवेकपूर्ण निर्णय लेने की अपनी ज़िम्मेदारी की ओर इशारा करते हैं, और अपने पूर्वाग्रहों को हमें नियंत्रित करने देने के बजाय ईश्वर द्वारा दिए गए सबूतों के साथ निष्पक्ष

रूप से पेश आना चाहिए। और यह, ज़ाहिर है, किसी भी उम्र के लिए अच्छी सलाह है। उह, यीशु के समय में यहूदियों को एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा था।

यीशु बिल्कुल वैसा नहीं था जैसा कि मसीहा के बारे में लोग उम्मीद कर रहे थे। इसके अलावा, वह सद्कियों के कुछ धार्मिक विचारों और फरीसियों के कुछ धार्मिक विचारों के खिलाफ गया, और जो लोग उन समूहों से संबंधित थे जो गंभीरता से परमेश्वर का अनुसरण करने की कोशिश कर रहे थे, उन्हें उस मामले से निपटना पड़ा और अपनी स्थिति पर पुनर्विचार करने की कोशिश करनी पड़ी। और ऐसा हमारे अपने ईसाई जीवन में भी हो सकता है, कि हमने जो कुछ माना है वह गलत साबित हो।

आप जानते हैं, शायद हमें लगता था कि हम बाइबल की व्याख्या कर रहे हैं, लेकिन हम ऐसा ठीक से नहीं कर रहे थे। मेरा मतलब है, कभी-कभी ऐसा होता है। हम अचूक नहीं हैं।

और इसलिए, हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए सबूतों के साथ निष्पक्षता से पेश आना चाहिए, न कि अपनी पूर्वधारणाओं को खुद पर हावी होने देना चाहिए। पद 3 हमें याद दिलाता है कि, आखिरकार, जब बात यीशु के साथ हमारे व्यवहार की आती है तो कोई तटस्थता नहीं होती। न पहले, न आज।

श्लोक 24 से 26 तक यह सुझाव देते हैं कि हमारे पास जो आशीर्वाद हैं, वे तब तक नहीं टिक सकते जब तक कि हम परमेश्वर के साथ उचित संबंध में न हों। जैसा कि हम अन्य अंशों से देख सकते हैं, भले ही हमें इस समय कोई आशीर्वाद न मिल रहा हो, अगर हम परमेश्वर से चिपके हुए हैं और सही काम करने की कोशिश कर रहे हैं, तो आशीर्वाद एक दिन आएगा। इसलिए, हमें बस इसके लिए इंतजार करने के लिए तैयार रहने की जरूरत है।

और श्लोक 27 से 28 संकेत देते हैं कि परमेश्वर को जानने और उससे प्रेम करने से बड़ा कोई आशीर्वाद नहीं है। तो, इसके साथ, हम यहीं रुकते हैं। इनमें से कोई भी अंश निस्संदेह, उन पर आगे काम करके आपको अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

लेकिन जैसा कि मैं इस तरह के पाठ्यक्रम में अपने छात्रों को बताता हूँ, आप आम तौर पर बाइबल अध्ययन या धर्मोपदेश तैयार करने जा रहे हैं। आप कोई शोध प्रबंध नहीं लिख रहे हैं। और इसलिए, आपको अपने अन्य कर्तव्यों के साथ-साथ उस अंश को पहले से बेहतर ढंग से समझने की कोशिश करने के लिए उचित समय बिताने की जरूरत है।

तो हम यहाँ यही कर रहे हैं। ठीक है, आज के लिए इतना ही काफी है। और हम आपसे, भगवान की इच्छा से, हमारे अगले सत्र में मिलेंगे।